वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग।
एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३३ ।।

सब अंगों के वस्त्र आभूषणों के कितने ही रंग हैं। कैसे कहूं? एक-एक नग में अनेक रंग हैं और एक-एक रंग में कई तरंगें हैं।

निलवट श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार।
हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार।। ३४ ।।

रूहों का मस्तक, कान, नाक, सिर, तन तथा गले के हार, हाथ, पांव, चरण के आभूषण के कई बेशुमार सिनगार हैं।

जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर।। ३५ ।।

जो परमधाम की रूहें हों वह विचार कर देखना। यहां अंगों के रंग तथा नग के रंग सब आपस में जंग करते हैं। ऐसी सुन्दर शोभा बनी है।

महामत कहे बैठियां देख के, हक हंसत हैं हम पर।
कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से रूहों को इकट्ठा बैठा देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और कहते हैं कि देखें खेल में जाकर कैसे इकट्ठी रहती हैं?

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १५८ ।।

ढाल दूसरा इसी सागर

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स।
याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस।। १ ।।

इस सुख के सागर की शोभा परमधाम की रूहें लेंगी, क्योंकि इनकी ही परआतम मूल-मिलावे में बैठी हैं। जिसे यह परस्पर देखेंगी।

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन।
वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन।। २ ।।

यह जो सपने के स्वरूप हैं इनकी परआतम की नजर इनको ही देख रही है। वह परआतम हमारे सपने के तनों को सपने में देख रहे हैं।

उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर।
अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर।। ३ ।।

जब हमारी आत्मा परआतम को परमधाम की नजर से देखे तो खेल में बैठे ही अखण्ड घर के सुख हृदय में चुभ जाते हैं।

सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम।
ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम।। ४ ।।

हमारी परआतम की नजर हमारे संसार के तनों पर है। जहां हम अलग-अलग हो गए हैं। इस संसार में हम जो कुछ करते हैं वह सब श्री राजजी का हुकम कराता है।

Nijanand App

इन बिध हक का इलम, हमको जगावत।
इलम किल्ली हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत।।५ ।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी हमको इस तरह से जगाती है। श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान हमको दिया है जिससे अखण्ड घर की पहचान होती है।

बीच असल तन और सुपने, पट नींदै का था।
सो नींद उड़ाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का।।६ ।।

हमारे मूल परमधाम के तन में और सपने के तन में परदा फरामोशी का था जिसे तारतम वाणी के ज्ञान से उड़ा दिया। फिर भी हम सपने के तन में बैठे हैं। श्री राजजी महाराज ने ऐसी करामात की है।

ना तो नींद उड़े पीछे सुपना, कबलों रेहेवे ए।
इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के।।७ ।।

नींद समाप्त होने पर सपना कितनी देर रहता है। इसी तरह से जागृत होने पर यह सपने का तन नहीं रहना चाहिए, पर क्या करें? श्री राजजी महाराज के हुकम से तन खड़ा है।

हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी दे।
खेल में जगाए इलमें, अब हुकम मिलावे ले।।८ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने ही खेल दिखाया और फरामोशी देकर अलग-अलग किया। फिर खेल में जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत किया। अब हुकम ही हमको इकट्ठा ले चलेगा।

बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रेहेवे दम।
उमेदां तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम।।९ ।।

अब समय नजदीक आ गया है जितने दिन बाकी रहना है उतने दिन तुम्हारी चाहना पूरी करने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से तुम्हें खेल में रखा हुआ है।

जो रूहें अर्स अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार।
ए बानी देख फजर की, सबे हूजो खबरदार।।१० ।।

इसलिए, हे परमधाम की रूहो! तुम सब प्यार से मिलो और इस फजर की वाणी को देखकर सब सावचेत हो जाओ।

अब फरामोसी क्यों रहे, जब खुल्या बका द्वार।
रूबरू किए हमको, तन असल नूर के पार।।११ ।।

अब परमधाम की पहचान तारतम वाणी से हो गई है, फिर फरामोशी कैसे रह सकती है। हमको तारतम ज्ञान ने अक्षर के पार मूल परआतम के सामने खड़ा कर दिया है।

बैठी थीं डर जिनके, सब हिल मिल एक होए।
हुकम हक के कौल पर, उलट तुमको जगावे सोए।।१२ ।।

जिस डर से रूहें हिल-मिलकर एक होकर बैठी थीं। अब श्री राजजी महाराज के वायदे के अनुसार उनका हुकम तुम्हें जगा रहा है।

Nijanand App

ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत।। १३ ।।

वरन यह स्वप्न के तन तो सपने की तरफ ही खींचते हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही है जो हमें सपने से खींचकर श्री राजजी से मिलवाता है।

यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम।
इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम।। १४ ।।

इस उलटी दुनियां से सीधे रास्ते पर जागृत बुद्धि तारतम वाणी के बिना कोई नहीं ला सकता। जागृत बुद्धि तुम्हारी चाहना पूरी करके यहां जगाकर श्री राजजी की तरफ खींचती है।

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए।
जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए।। १५ ।।

यह जो कुछ हो रहा है सब श्री राजजी के हुकम से हो रहा है। नहीं तो जाग जाने पर परआतम में फरामोशी कैसे रह सकती है? यह हुकम ही जगाकर मिला देगा।

सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान।
ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कौन सी मेहर कर रहे हैं उसकी खबर हमको नहीं होती। मेहरबान श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कई तरह से मेहर करते ही रहते हैं।

महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर की समझ रूहों को आ जाए तो अज्ञानता की रात मिटकर ज्ञान का सवेरा हो जाए।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १७५ ।।

सागर तीसरा एक दिली रूहन की

अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत।
रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तीसरा सागर नैरित दिशा में रूहों की एकदिली का है। अर्श की रूहें मूल-मिलावा में विराजमान हैं। यदि आत्म-दृष्टि से देखते हैं तो इनकी महिमा का पता लगता है।

अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए न सकें एक खिन।
ए माहें क्यों होंए जुदियां, असल रूहें एक तन।। २ ।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकतीं, क्योंकि एक तन हैं।

इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त।
एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित।। ३ ।।

इन सबकी अकल, चित्त, दिल और इश्क एक हैं। स्नेह, हित हमेशा अखण्ड है।

Nijanand App